1 'नव जीवन का विहान'

पाठ प्रवेश

बच्चों से पूछिए–

1. उपर्युक्त चित्र में क्या-क्या दिखाया जा रहा है?
2. क्या आप प्रकृति के सानिध्य में समय बिताना पसंद करते हैं?
3. क्या आपको ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति अपनी मूक क्रियाओं और गतिविधियों से हमें कुछ संदेश देती है।

पाठ परिचय– सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में प्रकृति प्रेम और मानवता का अद्भुत चित्रण मिलता है। नव-जीवन का विहान कविता में मानवता, सत्यता और सौंदर्य का महत्व उजागर किया गया है। यह कविता एक प्रेरणा स्रोत है जो हमें मानवता की सेवा करने और समाज में नव-जीवन का संचार करने के लिए प्रेरित करती है।

जग जीवन में जो **चिर** महान,
सौंदर्यपूर्ण और सत्य **प्राण**।

मैं उसका प्रेमी बनूँ नाथ,
जो है मानव के हित समान

जिससे जीवन में मिले **शक्ति**,
छूटे भय, **संशय**, **अंध** **भक्ति**।

मैं वह प्रकाश बन सकूँ नाथ,
मिल जावें जिसमें **अखिल** **व्यक्ति**।

पाकर प्रभु-तुमसे **अमर** **दान**,
करने मानव का **परित्राण**,

ला सकूँ विश्व में एक बार,
फिर से नव जीवन का **विहान**।

–सुमित्रानंदन पंत

नैतिक मूल्य

हमें मानवता, सत्य, शक्ति, साहस, और प्रकृति प्रेम का अपने जीवन में संचार करना चाहिए।

शब्दार्थ

जग–संसार, चिर–सदैव, सौंदर्यपूर्ण–सुंदरता से भरा, प्राण–जीवन, आत्मा, संशय–शक, भ्रम, अंधभक्ति–बिना सोचे-समझे की गई भक्ति, अखिल–सम्पूर्ण, समस्त, अमरदान–अमरत्व का वरदान, परित्राण–पूर्ण रक्षा, विहान–सुबह, नया आरंभ

अभ्यास

(पठन, भावग्रहण व लेखन कौशल)

बात पाठ की

मौखिक प्रश्न

मौखिक अभिव्यक्ति

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कविता में कवि ने किन चीज़ों की कामना की है?

(ख) कविता में "सौन्दर्यपूर्ण और सत्य प्राण" का क्या अर्थ है?

(ग) कवि मानवता के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना क्यों रखना चाहते हैं?

(घ) कवि किस प्रकार का प्रकाश बनने की आशा करते हैं?

(ङ) कवि प्रभु से किस प्रकार का वरदान माँगते हैं और क्यों?

बहुविकल्पीय प्रश्न

स्मृति आधारित, सैद्धान्तिक अनुप्रयोग

2. निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए–

(क) कवि के अनुसार जीवन में क्या मिलना चाहिए?

☐ संपत्ति ☐ शक्ति ☐ प्रसिद्धि ☐ उदासी

(ख) कविता में अंधभक्ति का क्या अर्थ है?

☐ बिना सोचे समझे की गई भक्ति ☐ गहरी भक्ति

☐ सच्ची भक्ति ☐ स्थाई भक्ति

(ग) कवि किससे अमर दान माँगते हैं?

☐ गुरु से ☐ ईश्वर से ☐ माता-पिता से ☐ समाज से

(घ) कवि किस चीज़ का संचार करना चाहते हैं?

☐ अंधकार ☐ संशय का ☐ नव जीवन का ☐ अविश्वास का

3. निम्नलिखित वाक्यों का हाँ/नहीं में उत्तर दीजिए–

हाँ / नहीं

(क) कवि नव जीवन का संचार नहीं करना चाहते हैं। ....

(ख) कविता में सौन्दर्यपूर्ण और सत्य प्राण का अर्थ है– सुंदरता और आत्मा से भरा जीवन। ....

(ग) कविता के अनुसार मनुष्य को भय, संशय और अंधभक्ति में लिप्त रहना चाहिए। ....

(घ) कवि मानव जीवन में प्रेम को महत्व देते हैं। ....

(ङ) कवि का उद्देश्य केवल धन अर्जित करना है। ....

लिखिए

स्मृति आधारित

लघु-उत्तरीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में लिखिए–**

(क) कविता में चिर और महान शब्दों का क्या अर्थ है?

(ख) कवि किसका प्रेमी बनना चाहता है?

(ग) कवि कैसा दिवस लाना चाहता है?

(घ) कविता के रचनाकार का नाम लिखिए।

दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए–**

(क) कविता में कवि ने मानव कल्याण के लिए किन-किन बातों की कामना की है?

(ख) "कवि का प्रकाश बनना" क्या प्रतीकात्मक महत्व रखता है?

(ग) "नव जीवन का विहान" कविता में कवि ने जिस जीवन की कल्पना की है, वह जीवन समाज के लिए कैसे लाभदायक है?

(घ) कवि ने अमर-दान की कामना क्यों की और इसका क्या महत्व है?

3. **निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए– (कविता के आधार पर)**

(क) जग जीवन में जो ....,
सौंदर्यपूर्ण और ....।

(ख) जिससे जीवन में ....,
छूटे भय संशय ....।

(ग) पाकर प्रभु-तुमसे ....,
करने मानव ....

4. **निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए–**

(क) जिससे जीवन में मिले शक्ति,
छूटे भय, संशय, अंध भक्ति।

(ख) ला सकूँ विश्व में एक बार
फिर से नव जीवन का विहान।

पाठ से आगे (सोचिए और उत्तर दीजिए)

1. **'नव जीवन का विहान' एक प्रतीकात्मक कविता है इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए कविता के सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा कीजिए।**

वाचन-कौशल

2. **निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर उत्तर दीजिए।**

पठन-कौशल

'नव जीवन का विहान' कविता का संदेश है कि हमें सत्य, सौन्दर्य और शक्ति से भरे जीवन की कामना करनी चाहिए। हमें मानवता की सेवा में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करना चाहिए। यह संदेश आज के समय में अत्यंत महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह हमें प्रेरित करता है कि हम अपने जीवन को प्रेम से परिपूर्ण समाज के निर्माण में अर्पित करें। यह विश्वास हमें संशय और अंधविश्वास से मुक्त होकर सच्चाई और मानवता की सेवा में जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

(क) हमें अपना जीवन किसके लिए अर्पित करना चाहिए?

(ख) हमें मानवता की सेवा क्यों करनी चाहिए?

(ग) उपर्युक्त उद्धरण से आपने क्या सीखा?

3. कविता को आधार मानकर एक छोटी-सी कहानी की रचना करके अपनी कॉपी में लिखिए। **लेखन-कौशल**

4. जिस प्रकार प्रत्येक प्रातः हमें नव जीवन का संदेश देता है उसी प्रकार प्रत्येक आने वाली ऋतु भी हमारे जीवन में नव संचार और उत्साह प्रवाहित करती है– क्या आप इस बात से सहमत हैं? **चिंतन-कौशल**

5. प्रातःकालीन वातावरण पर एक गीत दिया गया है। छात्र इसे ध्यानपूर्वक सुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए– **श्रवण-कौशल**

(क) इस गीत को सस्वर गाने का प्रयास कीजिए?
(ख) गीत में वर्णित सम्पूर्ण प्रातःकालीन परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए?
(ग) प्रकृति के नव गीत गाने का क्या अभिप्राय है?
(घ) अरुणाई शब्द का अर्थ क्या होता है?

मूल्यपरक प्रश्न

आपके अनुसार, कवि का संदेश आज के समाज में कितना प्रासंगिक है और क्यों?

बात भाषा की

(व्याकरणिक अधिगम)

1. वर्णों को अलग-अलग करके लिखना वर्ण विच्छेद कहलाता है; जैसे–

मानव – म् + आ + न् + अ + व् + अ दान – द् + आ + न् + अ

निम्नलिखित शब्दों का वर्ण विच्छेद कीजिए–

अखिल –	विहान – ....
समान –	मानव – ....
नाथ –	जीवन – ....
प्राण –	भय – ....

2. दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे संधि कहते हैं; जैसे– महा + ऋषि = महर्षि, जगत् + ईश = जगदीश, रजनी + ईश = रजनीश।

निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए–

अल्प + आयु –	देव + ईश – ....
अति + अधिक –	निः + फल – ....

3. **निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए?**

सुंदर ×	सत्य × ....
हित ×	सम्मान × ....
प्रकाश ×	नवीन × ....

4. बच्चो! हम उपसर्ग के विषय में पिछली कक्षा में पढ़ चुके हैं। मूल शब्द के प्रारंभ में लगकर मूल शब्दों के अर्थ को बदलने वाले शब्द उपसर्ग कहलाते हैं।

जैसे– उपवन = उप = उपसर्ग, वन = मूल शब्द = उपवन।

निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग अलग कीजिए।

अमर – .... + ...   प्रकाश – .... + ...   अखिल – .... + ...

परित्राण – .... + ...   उपकार – .... + ...   अपमान – .... + ...

5. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए–

(क) शक्ति – ....

(ख) प्रकाश – ....

(ग) अमर – ....

(घ) मानवता – ....

चिंतन सवंर्धन गतिविधियाँ

रचनात्मक-कौशल एवं मानसिक विकास

1. कविता 'नव जीवन का विहान' के आधार पर एक चित्र बनाइए जिसमें सूर्योदय का चित्रण, प्रकृति की सुंदरता, आदि दिखाइए और विभिन्न रंगों का उपयोग करके चित्र को जीवंत बनाइए। **कला समेकित**
(संकलन हेतु इंटरनेट से सहायता लें।)

2. प्रकृति चित्रण से सबंधित अन्य कवियों की रचनाओं का संकलन कीजिए एवं एक संगोष्ठी आयोजित कीजिए। समान रूचि – रखने वाले छात्र भाग लें और कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाएँ। **सहयोगात्मक क्रिया**

कवि परिचय

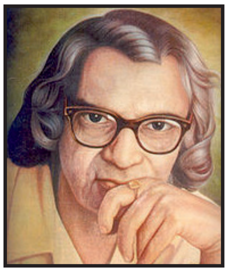

कवि सुमित्रानंदन पंत हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख स्तंभों में से एक हैं, उन्होंने प्रकृति प्रेम, मानवता और राष्ट्रीयता पर आधारित कविताएँ लिखीं। इनकी भाषा सरस, सरल और मधुर थी जो पाठकों का मन मोह लेती हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ– पल्लव, गुंजन, ग्राम्या, युगवाणी, आदि हैं। सुमित्रानंदन पंत को उनके साहित्यिक योगदान के लिए 1961 में साहित्य एकादमी पुरस्कार और 1969 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कवि का निधन 28 दिसंबर 1977 में हुआ। कवि का साहित्यिक योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है, वे साहित्य प्रेमियों के हृदय में सदा जीवित रहेंगे।

3 एलबम

पाठ प्रवेश

बच्चों से पूछिए–

1. बच्चो! इस चित्र में आपको क्या-क्या दिखाई दे रहा है?
2. क्या आपके घर पर भी इनमें से कुछ ऐसा है जिन्हें आप देखते और पहचानते हैं?

पाठ परिचय– यह पाठ एक एलबम और किताबों के चारों ओर केंद्रित है, इस पाठ में पंडित शादीराम और लाला सदानंद की कहानी है। इस कहानी के माध्यम से हमें यह सीखने को मिलेगा कि कठिन परिस्थितियों में हमें धैर्य और सहयोग से काम लेना चाहिए।

पंडित शादीराम ने ठंडी आह भरी और सोचने लगे – क्या यह **ऋण** कभी सिर से न उतरेगा?

वे गरीब थे, परंतु दिल के बुरे न थे। वे चाहते थे कि जिस तरह भी हो, अपने **यजमान** लाला सदानंद का रुपया अदा कर दें। उनके लिए एक-एक पैसा मोहर के बराबर था। अपना पेट काटकर बचाते थे, मगर जब चार पैसे जमा हो जाते, तो कोई-न-कोई ऐसा खर्च निकल आता था, जिससे सारा रुपया उड़ जाता। शादीराम के हृदय पर बरछियाँ चल जाती थीं। मगर वे कुछ कर न सकते थे।

इसी तरह कई साल बीत गए, शादीराम ने पैसा-पैसा बचाकर अस्सी रुपये जोड़ लिए। उन्हें लाला सदानंद के पाँच सौ रुपये देने थे। उनका लड़का लगातार चार महीने बीमार रहा। पैसा-पैसा करके बचाए हुए रुपये दवा में उड़ गए, पंडित शादीराम ने सिर पीट लिया। अब चारों ओर फिर अंधकार था। उसमें प्रकाश की हलकी-सी किरण भी दिखाई न देती थी।

लाला सदानंद अपने पुरोहित की **विवशता** को जानते थे। उन्हें इस रकम की ज़रा भी परवाह न थी। वे इस बात से इतना डरते थे, मानो रुपये उन्हीं को देने हों। मगर शादीराम के दिल में शांति न थी। वे सोचा करते कि यह कैसे **भलेमानस** हैं, जो अपनी रकम के बारे में मुझसे बात तक नहीं करते? लाला सदानंद की **भलमनसी** के सामने उनकी आँखें नहीं उठती थीं। एक दिन लाला सदानंद किसी काम से पंडित शादीराम के घर गए। उनकी अलमारी में कई सौ बँगला, हिंदी और अंग्रेज़ी की मासिक पत्रिकाएँ देखकर बोले– “यह क्या है पंडित जी?”

पंडित शादीराम ने उत्तर दिया– "पुरानी पत्रिकाएँ हैं। बड़े भाई को पढ़ने का शौक था। वही ये पत्रिकाएँ मँगवाते थे। वे जब जीवित थे, तो किसी को हाथ न लगाने देते थे। अब इन्हें कीड़े खा रहे हैं। कोई पूछता भी नहीं।"

"रद्दी में क्यों नहीं बेच देते?"

"इनमें चित्र हैं। जब कभी बच्चे रोने लगते हैं तो एक-आध निकालकर दे देता हूँ। बच्चों का दिल बहल जाता है।"

लाला सदानंद ने आगे बढ़कर कहा – "दो, ज़रा देखें, कैसे चित्र हैं?"

पंडित शादीराम ने कई सुंदर और रंगीन चित्र दिखाए। लाला सदानंद कुछ देर तक उलट-पुलटकर देखते रहे। **सहसा** बोले– "ये चित्रकला के बढ़िया नमूने हैं। अगर किसी शौकीन को पसंद आ जाएँ, तो हज़ार-दो हज़ार रुपये बड़ी आसानी से कमा सकते हैं।"

पंडित शादीराम ने एक ठंडी साँस भरकर कहा– "ऐसे भाग्य होते, तो यों धक्के न खाता फिरता।"

लाला सदानंद बोले– "एक काम करो।"

"क्या?"

"आज बैठकर जितनी अच्छी-अच्छी तस्वीरें हैं, सबको अलग छाँट लो।"

"बहुत अच्छा।"

"जब यह कर चुकें, तो मुझे कहलवा दें।"

"आप क्या करेंगे?"

"मैं इनकी एलबम बनाऊँगा, और आपकी तरफ़ से **विज्ञापन** दे दूँगा। हो सकता है, यह विज्ञापन किसी **शौकीन** के हाथ पड़ जाए और आप दो-चार पैसे कमा लें। तस्वीरें बहुत बढ़िया हैं।"

पंडित शादीराम को यह आशा न थी कि कोयले की खान में हीरा मिल जाएगा। घोर निराशा ने सभी द्वार बंद कर दिए थे। लाला सदानंद के कहने से पंडित जी दिन भर बैठकर तस्वीरें छाँटते रहे। शाम तक दो सौ बढ़िया चित्र जमा हो गए। उस समय वे उन्हें देखकर स्वयं उछल पड़े। उनके मुख पर आनंद की **आभा** नाचने लगी। वे उन चित्रों की ओर इस तरह देखते थे, मानो उनमें से हर एक में दस-दस के नोट हों। बच्चों को उधर देखने तक न देते थे। वे सफलता के विचार से ही झूमने लगे थे।

लाला सदानंद ने चित्रों को एलबम में लगवाया और समाचार-पत्रों में विज्ञापन दे दिया। अब पंडित शादीराम हर समय डाकिए की **प्रतीक्षा** करते रहते थे। वे रोज़ सोचते थे कि आज कोई चिट्ठी आएगी। दिन बीत जाता और कोई चिट्ठी न आती थी। रात को आशा सड़क की धूल की तरह बैठ जाती थी। मगर दूसरे दिन लाला सदानंद की बातों से टूटी हुई आशा फिर जुड़ जाती थी।

दिन बीतते गए। आखिर एक दिन शादीराम के भाग्य जागे। कोलकाता के एक मारवाड़ी सेठ ने पत्र लिखा कि एलबम भेज दो। अगर पसंद आ गए, तो खरीद लिया जाएगा। पंडित शादीराम दौड़े हुए लाला सादानंद के पास पहुँचे और उन्हें पत्र दिखाया।

लाला सदानंद ने पत्र को अच्छी तरह देखा और जवाब दिया– "रजिस्ट्री कराकर एलबम भेज दो। शौकीन आदमी मालूम होता है, खरीद लेगा।"

"और मूल्य?"

"लिख दो, एक हज़ार रुपये से कम पर सौदा न होगा।"

कुछ दिन बाद उन्हें जवाब में एक बीमा मिला। पंडित शादीराम के हाथ-पैर से ज़्यादा उनका दिल काँप रहा था। उन्होंने लिफ़ाफ़े को खोला और उछल पड़े। उसमें सौ-सौ के दस नोट थे। पहले उनके भाग्य ने करवट बदली थी, अब वह पूर्ण रूप से उठकर बैठ गया। पंडित शादीराम सोचने लगे – अगर दो हज़ार रुपये लिख देता, तो शायद उतने ही मिल जाते। इस सोच ने उनकी सारी खुशी किरकिरी कर दी।

साँझ के बाद वह लाला सदानंद के पास गए और पाँच सौ रुपये सामने रखकर बोले – "परमात्मा का धन्यवाद है कि मुझे इस मार से छुटकारा मिला। अपने रुपये सँभाल लीजिए। आपने जो दया और सज्जनता दिखाई है, उसे मैं मरते दम तक न भूलूँगा।"

लाला सदानंद ने हैरान-सा होकर पूछा–

"पंडित जी, क्या सेठ ने एलबम खरीद लिया?"

"जी हाँ, खरीद लिया।"

"और रुपये भी आ गए?"

"जी हाँ"

"एक हज़ार?"

"जी हाँ। नहीं तो मुझ गरीब ब्राह्मण के पास क्या था, जो आपका ऋण चुका देता? परमात्मा ने मेरी सुन ली।"

"मेरा विचार है कि आप ये रुपये अपने पास ही रखें। मैं आपका यजमान हूँ। मेरा धर्म है कि आपकी सेवा करूँ। अगर मैंने चार पैसे दे दिए, तो कौन-सा गज़ब हो गया!"

पंडित जी की आँखों में आँसू आ गए। वे बोले – "आप जैसे सज्जन संसार में बहुत थोड़े हैं। परमात्मा आपको **चिरंजीवी** रखे, मगर अब तो मैं यह रुपये न लूँगा। इतने वर्ष आपने माँगे तक नहीं। मुझे आज हलका होने दीजिए।" लाला सदानंद ने चुपचाप रुपये रख लिए। मनुष्य रुपये देकर भी ऐसा प्रसन्न हो सकता है, इसका अनुभव उन्हें पहली बार हुआ।

छह महीने बीत गए। लाला सदानंद बीमार थे। पंडित शादीराम उनके लिए दिन-रात माला फेरा करते थे। एक दिन लाला सदानंद चारपाई पर लेटे थे। पास पड़ी चौकी पर पंडित शादीराम बैठे, रोगी को भगवद्गीता सुना रहे थे।

एकाएक लाला सदानंद **बेसुध** हो गए। पंडित जी ने गीता छोड़ दी और उनके सिरहाने बैठ गए। स्त्री गरम दूध लेने के लिए बाहर दौड़ी और माँ घबराकर बेटे को आवाज़ें देने लगीं। उसी समय पंडित जी को रोगी के सिरहाने के नीचे कोई चुभती हुई चीज़ जान पड़ी। उन्होंने नीचे हाथ डालकर देखा, तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही। वह सख्त चीज़ वही एलबम थी, जिसे किसी सेठ ने नहीं, बल्कि स्वयं लाला सदानंद ने खरीद लिया था।

पंडित शादीराम इस विचार से बहुत प्रसन्न थे कि उन्होंने सदानंद का ऋण उतार दिया है। मगर यह जानकर उनके हृदय को चोट-सी लगी कि ऋण उतरा नहीं, बल्कि पहले से दोगुना हो गया है। उन्होंने एक ठंडी साँस भरी।

कुछ देर बाद लाला सदानंद को होश आया। उन्होंने पंडित जी से एलबम छीन लिया। धीरे से कहा, "यह एलबम अब मैंने सेठ साहब से मँगवा लिया है।"

पंडित जी जानते थे कि यजमान झूठ बोल रहे हैं। वे किसी भी तरह यह न कह सके कि आप झूठ बोल रहे हैं, परंतु अब वे उन्हें पहले से भी अधिक सज्जन, अधिक उपकारी और ऊँचा समझने लगे थे।

—सुदर्शन

नैतिक मूल्य हमें कठिन परिस्थितियों में धैर्य और समझदारी से काम लेना चाहिए।

शब्दार्थ ऋण—कर्ज़, उधार, यजमान—धार्मिक कार्य कराने वाला, विवशता—लाचारी, मजबूरी, भलेमानस—भला आदमी, भलमनसी—शराफ़त, सहसा—अचानक, विज्ञापन—इश्तहार, शौकीन—शौक रखने वाला, आभा—चमक, प्रतीक्षा—इंतज़ार, चिरंजीवी—दीर्घायु का आशीर्वाद, बेसुध—अचेत, बेहोश

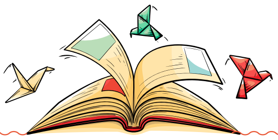

अभ्यास

(पठन, भावग्रहण व लेखन कौशल)

बात पाठ की

मौखिक प्रश्न

मौखिक अभिव्यक्ति

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) पंडित शादीराम किस समस्या से परेशान थे?

(ख) लाला सदानंद ने पंडित शादीराम की कैसे मदद की?

(ग) पंडित शादीराम ने कर्ज चुकाने के लिए क्या किया?

(घ) एलबम कितने में बिकी?

(ङ) पंडित शादीराम की अलमारी में क्या था?

(च) इस कहानी के लेखक का नाम क्या है?

बहुविकल्पीय प्रश्न

स्मृति आधारित, सैद्धान्तिक अनुप्रयोग

2. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए–

(क) पंडित शादीराम की समस्या क्या थी?

☐ बीमारी ☐ कर्ज ☐ परिवार की समस्या ☐ व्यापार में घाटा

(ख) लाला सदानंद ने पंडित शादीराम की मदद किस तरह की?

☐ पैसे देकर ☐ सलाह देकर ☐ काम दिलवाकर ☐ कर्ज दिलवाकर

(ग) पंडित शादीराम ने कर्ज चुकाने के लिए क्या बेचा?

☐ किताबें ☐ जमीन ☐ तस्वीरों का एलबम ☐ घर

(घ) कहानी में किस मूल्य पर जोर दिया गया है?

☐ मित्रता ☐ धैर्य ☐ दोनों ☐ इनमें से कोई नहीं

(ड़) पंडित शादीराम की अलमारी में क्या था?

☐ कपड़े ☐ किताबें ☐ तस्वीरों का एलबम ☐ पैसे

3. सही/गलत बताइए–

(क) पंडित शादीराम का कोई दोस्त नहीं था। (सही / गलत)

(ख) लाला सदानंद ने पंडित शादीराम को पैसे दिए। (सही / गलत)

(ग) पंडित शादीराम की समस्या कर्ज थी। (सही / गलत)

(घ) पंडित शादीराम की अलमारी में गहने थे। (सही / गलत)

(ङ) इस कहानी से हमें मित्रता का महत्व समझ आता है। (सही / गलत)

लिखिए

स्मृति आधारित

लघु-उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दीजिए–

(क) पंडित शादीराम पर किसका ऋण था?

(ख) पंडित शादीराम के यहाँ किसकी पत्रिकाएँ थीं?

(ग) लाला सदानंद ने शादीराम जी को क्या सलाह दी?

(घ) एलबम को किसे और कैसे भेजा गया?

(ड़) लाला सदानंद का ऋण कैसे चुकाया गया?

दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए–

(क) पाठ के लेखक श्री सुदर्शन जी का जीवन परिचय दीजिए।

(ख) कहानी के आधार पर शादीराम और सदानंद के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

(ग) कहानी के शीर्षक 'एलबम' का यहाँ क्या किरदार था? विस्तार से एलबम के रहस्य को बताइए।

(घ) आपको इस कहानी से क्या सीखने को मिला? अपने शब्दों में बताइए।

3. निम्नलिखित पाठांश में सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

भलमनसी	विवशता	पत्रिकाएँ	अलमारी	भलेमानस

लाला सदानंद अपने पुरोहित की .... को जानते थे। उन्हें इस रकम की ज़रा भी परवाह न थी। उन्हें इस रकम की ज़रा भी परवाह न थी। मगर शादीराम के दिल में शांति न थी। वे सोचा करते कि यह कैसे .... है, जो अपनी रकम के बारे में मुझसे बात तक नहीं करते? लाला सदानंद की .... के सामने उनकी आँखें नहीं उठती थीं। एक दिन लाला सदानंद किसी काम से पंडित शादीराम के घर गए। उनकी .... में कई सौ बँगला, हिंदी और अंग्रेजी की मासिक .... देखकर बोले– "यह क्या है पंडित जी?"

पाठ से आगे (सोचिए और उत्तर दीजिए)

1. बच्चो! "अगर आप लाला सदानंद की जगह होते, तो आप पंडित शादीराम की कैसे मदद करते?" कल्पना करें, "अगर पंडित शादीराम ने लाला सदानंद की सलाह नहीं मानी होती तो क्या होता?

चिंतन-कौशल

2. परीक्षा से कुछ दिन पहले आपके मित्र की किताब खो गई। ऐसे में आपने कुछ दिनों के लिए अपनी पुस्तक देकर उसकी मदद की, लेकिन परीक्षा निकट आ गई और आपके मित्र ने आपकी पुस्तक वापस नहीं की है। ऐसे में आप क्या करेंगे? **बौद्धिक विस्तार**

3. 'भिक्षा देना' और 'किसी पर दया दिखाना' ये दोनों ही अलग-अलग भाव रखते हैं। आप इस पर अपने विचार इसी पाठ को आधार मानते हुए लिखिए। **लेखन-कौशल**

4. इंटरनेट की सहायता से सच्ची मित्रता पर कोई कविता पढ़कर कक्षा में सुनाइए। **पठन-कौशल**

5. पंक्तियों को ध्यानपूर्वक सुनकर उत्तर दीजिए। **श्रवण-कौशल**

   (क) राम और श्याम कहाँ रहते थे?
   (ख) राम और श्याम ने कहाँ जाने का सोचा?
   (ग) राम का पैर कैसे फिसल गया?
   (घ) श्याम ने राम की कैसे मदद की?
   (ङ) मित्रता का सही मतलब क्या होता है?

6. इस कहानी में लाला सदानंद जी ने पंडित जी की मदद के लिए कुछ झूठ बोला तथा कुछ बातें छुपाई भी। आपको क्या लगता है उन्होंने सही किया? यहाँ पर झूठ बोलना या उनसे बात छुपाना आपको सही लगा? अपने विचार सबके साथ साझा कीजिए। **वाचन-कौशल**

मूल्यपरक प्रश्न

अगर आप लाला सदानंद के स्थान पर होते तो आप पंडित शादीराम की समस्या का समाधान कैसे करते?

बात भाषा की

(व्याकरणिक अधिगम)

1. **विशेष्य–** जिन शब्दों की विशेषता बतायी जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं।
   विशेषण– संज्ञा एवं सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

   निम्नलिखित वाक्यों में विशेष्य को रेखांकित करें और विशेषण को गोला लगाकर उनकी पहचान करें–

   (क) पंडित शादीराम की पुरानी तस्वीरें बहुत सुंदर थीं।
   (ख) लाला सदानंद ने सटीक सलाह दी।
   (ग) पंडित शादीराम का बड़ा एलबम बन गया।
   (घ) गाँव के ईमानदार लोग हमेशा मदद करते हैं।
   (ङ) लाला सदानंद ने अच्छी तरह से समस्या हल की।

2. सर्वनाम वे शब्द हैं जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं।

   निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम की पहचान करें और उन्हें रेखांकित करें–

   (क) पंडित शादीराम ने लाला सदानंद की मदद ली। उन्होंने उसे धन्यवाद दिया।
   (ख) लाला सदानंद ने कहा, "मैं तुम्हारी मदद करूँगा।"
   (ग) पंडित शादीराम और लाला सदानंद ने मिलकर काम किया।
   (घ) यह एलबम बहुत कीमती है।
   (ङ) वे दोनों मित्र हैं और हमेशा एक-दूसरे की मदद करते हैं।